



अवर गेस्ट
सैय्यद हैदर रजा
(विश्व प्रसिद्ध भारतीय पेंटर)

विश्व प्रसिद्ध भारतीय पेंटर सैय्यद हैदर रजा का कहना है कि अमेरिका विदेशी दिमागों का सही उपयोग करता है, जबकि भारत में उनकी ठीक से कद्र नहीं होती। फ्रांस में बसे पेंटर हैदर रजा रंगायन संस्था के कार्यक्रम में भाग लेने भोपाल आए हुए हैं। पेश है उनसे बातचीत के खास अंश -

मुझे अफसोस है कि दुस्रैन विदेश में हैं...

जागरण सिटी

टेलेट की कद्र होना चाहिए

सैय्यद हैदर रजा से एमएफ हुसैन के विदेश में होने पर टिप्पणी करने पर पहले तो उन्होंने मना कर दिया, परंतु फिर कहा कि हुसैन बहुत बड़े चित्रकार हैं। पूरा विश्व उनकी कद्र करता है। मुझे अफसोस है कि वे विदेश में हैं।

मैं पेरिस में श्लोक पढ़ता हूँ

ग्लोबलाइजेशन कोई बुरी बात नहीं है। अच्छे विचार जहाँ से मिले स्वीकार करना चाहिए। भारत तो विचारों के मामले में शुरू से ही विश्व को लीड करता रहा है। दूसरों का असर अपने ऊपर हो, इससे अच्छा है कि दूसरे को अपने रंग में रंग लो। मैं पेरिस में हिंदी बोलता हूँ। वहाँ श्लोक भी पढ़ कर सुनाता हूँ। भारतीय ज्ञान की दुनिया भर में कद्र है। जिन लोगों ने कभी भारत या भारतीय ज्ञान की

अवहेलना की थी, वो ही आज इसे इज्जत की निगाह से देखते हैं। पेरिस में सालों साल काम करके पाया कि मेरे देश की खुशबू इसमें नदारद है। फिर मैं भारत आया और यहाँ के मंदिर, जंगल, अर्जन्ता एलोप जैसे स्थान देखे। मैंने भगवत गीता पढ़ी, इसके बाद मेरे अंदर जो ज्ञान आया उसने ही मेरे

जीवन उनका आभारी रहूँगा, अब मैं उनके लिए दमोह में एक स्मारक बनाने जा रहा हूँ।

युवा चित्रकारों को सीख

रजा का मानना है कि युवा चित्रकार कुछ ज्यादा ही जल्दी में रहते हैं। वो भूल जाते हैं कि चाहे मैं हूँ या कोई और, हमने सालों की

बढ़ाना चाहिए। इससे उसका काम ओरिजनेल तो होता ही है, साथ में काम में रिचनेस भी आती है।

भोपाल इज ग्रोइंग

सैय्यद हैदर रजा हर साल भोपाल आते हैं। यह पूछने पर कि प्रत्येक वर्ष वो भोपाल में लुप्टा फर्क पाते हैं, वे कहते हैं कि भोपाल के चित्रकार बहुत तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। मैं फ्रांस, अमेरिका और कई देश प्रत्येक वर्ष जाता रहता हूँ, परंतु जितनी तेजी से भोपाल के कलाकार परिपक्व हो रहे हैं उतने कहीं और के नहीं। यहाँ के कलाकार खास तौर पर अखिलेश, मनीष मुक्कले, सीमा पुरेय्या, सुजिता बजाज, स्मृति दीक्षित और संजु जैन का नाम लेना चाहूँगा जो बहुत ही खास अंदाज में अग्रिम बढ़ रहे हैं। इनके चित्रों में वास्तविकता है।

shahrozkhana@rediffmail.com

युवा चित्रकार तेज न दौड़ें

काम को बेहतर बनाया। इसी के बाद मैंने बिंदु और कुंडलिनी जैसी सीरीज बनाई, जिसकी दुनिया भर में प्रशंसा हुई।

गुरु के लिए स्मारक बनाना है

मैं आज जो कुछ भी हूँ, मेरे गुरुओं की वजह से हूँ। दमोह में मेरे गुरु बेनी प्रसाद जी ने जो कुछ सिखाया, मुझे उस पर गर्व है। साय

मेहनत के बाद यह मुकाम हासिल किया है। शुरुआती दौर में काम की बारीकियाँ समझ नहीं आती, यह परिपक्वता समय के साथ ही आती है। दूसरा युवा चित्रकारों को यह सीख भी देना चाहूँगा कि शुरू में वो अपनी पेंटिंग्स का रेट एकदम से न बढ़ाए। इससे बाद में उनको नुकसान होता है। यह मैं पेरिस में देख चुका हूँ। हर चित्रकार को अंतर्ज्ञान

इसलिए कि रोटी बनाकर आज तक किसी का नाम नहीं हुआ



पूजा करने का एक उद्देश्य यह भी है कि व्यक्ति अपनी ऊर्जा किसी सकारात्मक कार्य में लगाए और बुरे कामों से बचा रहे। वहीं एक चित्रकार का कहना है कि मैं अपना समय अपने कैनवास के साथ व्यतीत करती हूँ, इसी बहाने बेकार की बातों से भी बची रहती हूँ और अपनी ऊर्जा का सही उपयोग भी करती हूँ। इस हिसाब से मेरा काम ही मेरी पूजा है। पेंटिंग को इस दृष्टिकोण से अपनाने वाली यह चित्रकार हैं संजू जैन, जो प्रदेश सरकार के कालिदास सम्मान के अलावा दर्जनों अवार्ड हासिल कर चुकी हैं। संजू ने पेंटिंग में अपनी एक अलग स्टाइल एजाद की है, जो आज उनकी पहचान बन गई है।

हर चित्रकार का स्वप्न होता है कि उसकी पहचान उसके काम के कारण हो। इसे संजू जैन की मेहनत कहें या उनका भाग्य कि वो अल्पकाल में ही अपनी शैली को अपनी पहचान बनाने में कामयाब हो गई। अमूर्त अथवा एब्सट्रेक्ट विषयों पर काम करने वाले चित्रकारों को कई मायनों में अधिक मेहनत करनी पड़ती है। पूरा खेल रंगों के संयोजन का होता है। संजू जैन अमूर्त विषय पर काम जरूर करती हैं, परंतु उसमें संदेश स्पष्ट झलकता है। उनके चित्रों में रंगों का अनुठा संयोजन देखने को मिलता है। किसी चित्र में जीवन का ठप्सव देखने को मिलता है तो कहीं जिंदगी की गहराइयां। संजू का कहना है कि यह चित्र कैनवास पर स्वयं को लिखे गए पत्र हैं। मैं कैनवास के आगे खड़े हो जाती हूँ, और फिर कैनवास ही मुझे आगे लेकर चलता है।

पेंटिंग की ओर रुझान बचपन से ही था, परंतु इसमें कोई मुकाम भी मिल जाएगा यह नहीं सोचा था। जिला होशंगाबाद के आरी गांव में जन्मी संजू अपने गांव में ही बिखरी आर्ट से प्रभावित हुई। कच्चे मकान के आंगन में गोबर की कलात्मक लीप, घर के बाहर दीवार पर पारंपरिक लोककलाएं उनके अंदर ऐसी घर कर गई कि कॉलेज में आर्ट विषय चुना और स्नातकोत्तर भी कला में ही किया। इसी बीच शादी के बाद टीकमगढ़ से भोपाल आना हुआ, जहां उनकी मुलाकात नामी चित्रकार लक्ष्मण भांड से हुई जिनके रूप में उन्हें सच्चा गुरु मिल गया। उन्होंने ही मुझे भारत भवन के बारे में बताया, जहां से मुझे ग्राफिक्स के बारे में पता चला।

भारत भवन मैंने जाना शुरू ही किया था, कि सीहोर में नौकरी लग गई। फिर भी मेरा शौक मुझे सीहोर से रोजाना अपडाउन करने पर मजबूर कर रहा था, जो मैंने शौक से किया। लगभग आठ सालों तक यह सिलसिला चला, जहां से मुझे सही दिशा मिली।

'रोटी बनाकर आज तक किसी का नाम नहीं हुआ। कुछ अलग हट कर करो और नाम करो।' यह प्रोत्साहन वाक्य संजू के पति मदन जैन के है। संजू बताती हैं कि मेरे पति ने मेरा हर कदम पर साथ दिया है। शादी के बाद ससुराल जाते समय मेरे सामान में पेंट और ब्रश भी थे। मेरी सास ने भी मुझे भरपूर सहाय दिया। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ, जो मुझे ऐसा परिवार और पति मिला। यही सुख मेरे चित्रों में भी झलकता है।

● शाहरोज आफरीदी

हे निड जागियन 2020-21 7 नवंबर 21

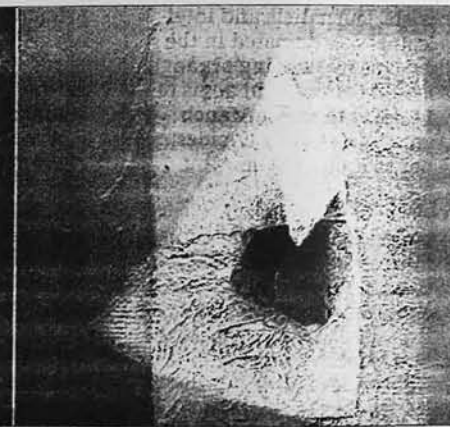
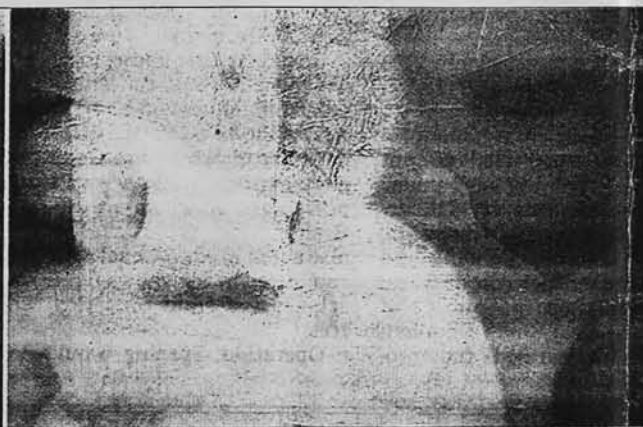
ART REVIEW

These abstracts speak volumes

Vanita Srivastava
Bhopal, January 8

SANJU JAIN cannot imagine a day without breathing through her canvas. "The day I don't hold my paint and brush, I feel incomplete and a strange emptiness envelops me," she says candidly. Her 40 abstract paintings adorning the Art Gallery of Bharat Bhavan speak volumes about her steely determination to learn the mystic of art and its multi-hued landscape.

The texture paintings with myriad colours may be abstract, but they flow with immense feelings and artistic poise. Her paintings do not have a defined meaning and the viewer can extract different assumptions. The more one delves into her paintings, the more artistic corollaries one can draw, and the more intricacies one can unveil. But for this, the viewer needs to 'gaze' at the paintings and journey beyond the spectrum of colours.



PHOTO/HT

Sanju Jain's abstract paintings on display in the Art Gallery of Bharat Bhavan in the City.

The 'ghat' or the 'saupan' reflects the serene flow of a river and the adjoining 'sidhis' (steps). Most of the paintings radiate a range of colours picked up from natural surroundings, some even echo the sonorous reverberations of a tranquil environ, but again one has to tread deep with-

in the paintings to get such vibrations.

The 'chutki bhar dhoop' enmeshed with dark yellow and green base, 'haritima' mirroring the 'hariyali' in the rainy season with a bright canvas combination, 'heritage' which decodes the artistic language of our rich

heritage trove, the 4-5 Udaan series that prolifically distill a freedom from forms and feelings and a desire to fly to new heights in the sky, the 'utsav' series which ooze the zeal and fervour that highlights the festive celebrations, 'phagun' which filters a splash of colours - all are ab-

stract, yet with a profound meaning. Just dig out the artistic harmony that lies behind the colourful veneer.

Before wrapping up, a mention must be made of the 8-10 black and white paintings, which the painter describes as a journey of infinite. "I don't want a manzil, I

just want to continue treading. I pray to God to give me strength to hone my creativity till my last breath," the young artist sums up.

Venue: Bharat Bhavan

From: January 8 to 13

Timing: 1pm to 7pm

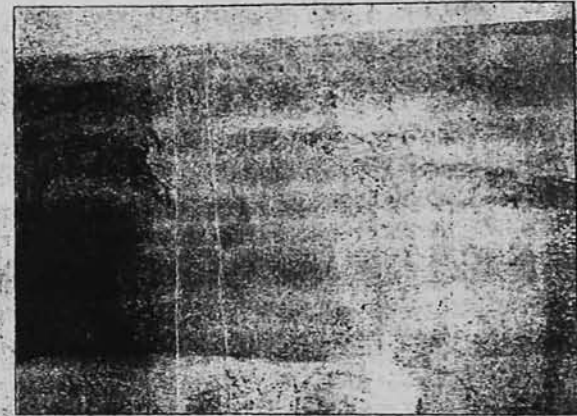
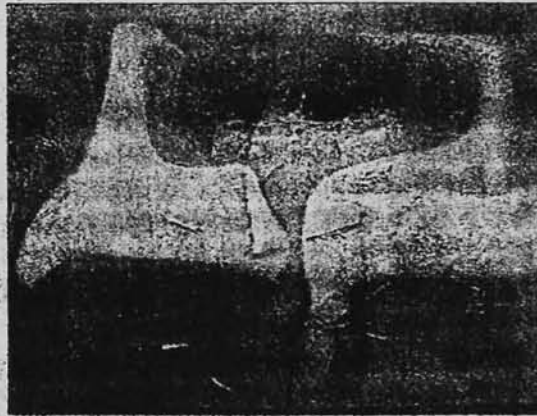
Colours grip capital

Bhopal Today Team

Bhopal Jan 9: 'Sanju Jain' who is related with world of colours is a master in brushing meaningful paintings. Her work is not limited p to a subject but its full of colours in all aspects of life. Espaciality of 'Sanju Jain' who has won many awards is that her every work consists on many issues. The exhibition which has been set up in Bharat Bhavan, speaks in same manner. In this exhibition her every portrait is based on different angles. It includes women, earth and the universe.



Mode of flight

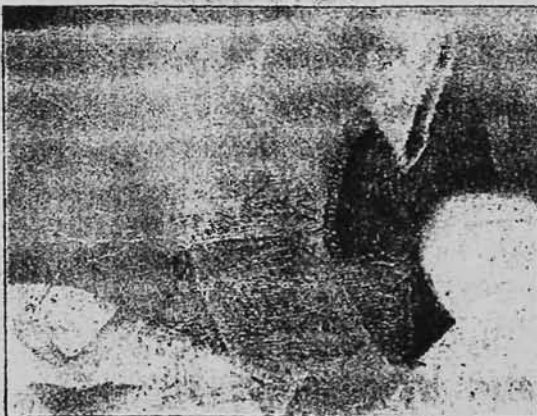


Rise of colours

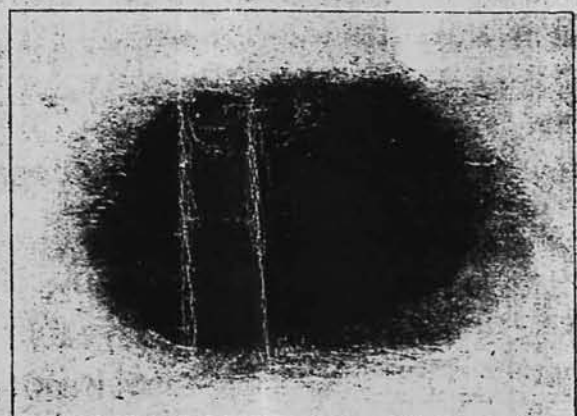
Mangalik



Many colours of art



Beauty of nature in colours



It's bright and beautiful

रंगों में रंगी राजधानी

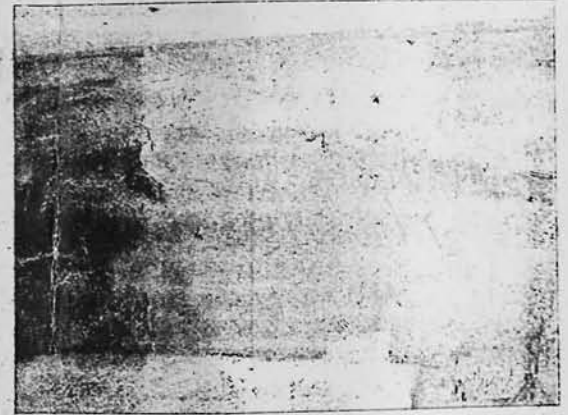
रंगों की दुनियां से वास्ता रखने वाली संजू जैन को चित्रकारी में महारत हासिल है. इनके बनाए चित्र किसी एक विषय या सिमा में ना बंधकर जीवन के अनेक रंगों को अपने अंदर समेटे हुए होते हैं. कई अवार्डों से सम्मानित संजू जैन के कला की खासीयत ये होती है कि इनके रंगों में एक साथ कई विषय छिपे होते हैं. इस बार भी भारत भवन में लगी इनकी प्रदर्शनी कुछ ऐसा ही कह रही है. इनकी चित्रकारी में इस बार महिला के स्वरूप से लेकर मानव के सृष्टी और पृथ्वी के रूप को बड़ी अजब तरीके से उभारा है.



उड़ान का स्वरूप



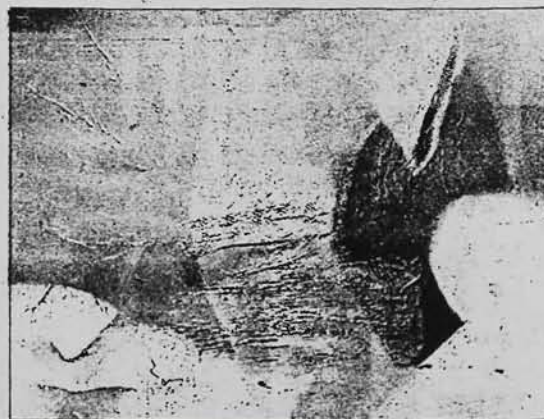
रंगों का चढ़ाव



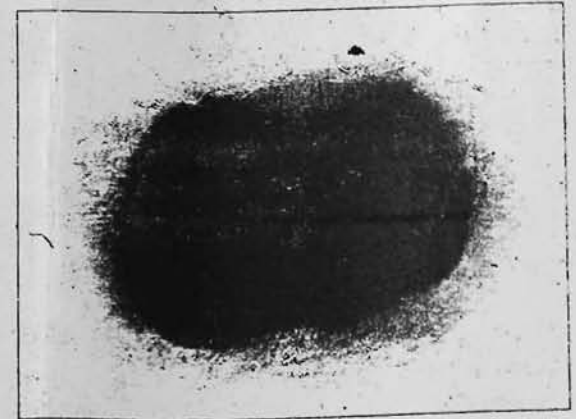
मांगलिक



कला के क...



प्रकृति को छटा इस रंग में



डार्क है फिर भी सुहाना

भारत भवन में संजू जैन की कृतियों की प्रदर्शनी शुरू

‘रूपाभ’ में खिले रंग



— चेतन खत्री

भारत भवन की रंगदर्शनी दीर्घा में मंगलवार को चित्रकार संजू जैन की कृतियों की प्रदर्शनी शुरू हुई। यह आयोजन रुपकर की नियमित श्रृंखला ‘रूपाभ’ के तहत किया गया है। संजू के चित्रों को दर्शक 13 जनवरी तक रोजाना दोपहर 1 बजे से शाम 7 बजे तक देख सकेंगे।

सिटी रिपोर्टर भोपाल

प्रदर्शनी का उद्घाटन संजू के पहले गुरु और वरिष्ठ चित्रकार लक्ष्मण भांड ने किया। चित्रों को देखने के बाद उनकी प्रतिक्रिया थी, ‘चित्र परफेक्शन की तरफ बढ़ रहे हैं।’ संजू का कहना है, गुरु होने के नाते वह भरे चित्रों को ज्यादा अच्छी तरह से पढ़ पाते हैं।

एक्स्ट्रेक्ट में कंफर्टबल

लगभग बीस सालों से कलाकर्म में जुटी संजू ने अलग-अलग फॉर्म को तलाशते हुए अंततः चित्रकारी के एक्स्ट्रेक्ट फॉर्म में खुद को कंफर्टबल महसूस किया। वह बताती हैं, ‘मुझे फ्रीडम पसंद है। जिस तरह हवा का कोई फॉर्म नहीं होता, रंगों का कोई आकार नहीं होता, उड़ान स्वच्छंद होती है उसी तरह मैं भी अपनी कला को किसी बंधन में नहीं रखना चाहती।’

कैनवस मुझे लेकर चलता है



संजू का कहना है, मैं सोचकर काम नहीं करती, कैनवस मुझे लेकर चलता है, वही मुझे बताता है कहां रुकना है। भारत भवन में यह उनकी पहली सोलो

एक्जीबिशन है। अगले माह दिल्ली में प्रदर्शनी की तैयारी है।

बिखरे हैं रंग

संजू ने अपने चित्रों में बहुत कुछ कहा है, पर शांति और प्यार से। उनका नीला रंग अंडमान निकोबार की यात्रा से प्रेरित है। चित्रकार ने मानो पूरा सागर समा लिया हो खुद में और वह चित्रों के माध्यम से लौट-लौटकर आता दिखाई देता है। लाल-पीले रंगों में हल्दी-कुंकू, कलवा के मांगलिक रंग बिखरे हैं। संजू को भोपाल की वादियों से झरकर आती किरणों ने भी प्रेरित किया है।

तभी तो उनके काफी चित्रों में भरपूर धूप खिली है। कैनवस पर फागुन के रंग भी बिखरे हैं और काले-सफेद रंगों के जरिए जीवन की यात्रा का रहस्य और रोमांच भी।

रंगदीर्घा में रंगों का उत्सव

राज एक्सप्रेस

■ राज रिपोर्टर

भोपाल। केनवास पर मिक्स मीडिया में काम करने वाली आर्टिस्ट संजू जैन की चित्र प्रदर्शनी की शुरूआत मंगलवार की शाम भारत भवन में हुई। चटख रंगों से सराबोर उनकी चित्र प्रदर्शनी में सभी रंगों का समावेश था एक लाइन में कहना हो तो कहा जा सकता है। रंगदीर्घा में रंगों का उत्सव था। संजू के चित्रों में लाल, नीले, हरे, पीले, गुलाबी सहित आदि-आदि रंग तो थे ही, उनके चित्रों में ब्लैक एण्ड व्हाइट रंग का भी इस्तेमाल था। संजू जैन के चित्रों के विषयों में मांगलिक, फागुन, अंडमान, यात्रा, उड़ान और प्रकाश का समावेश था। उनके चित्र अमूर्त श्रेणी के चित्र थे। कुछ पेंटिंग्स में सलवटें नजर आती हैं। इस बारे में सुश्री जैन का कहना था कि ये चित्र जिंदगी का प्रतिबिंब हैं जो खुद भी सलवटों से भरी है। अंडमान पर उनके तीन चित्र प्रदर्शनी में देखे जा सकते हैं। इनके बारे में सुश्री जैन का कहना था कि पानी के अंदर की इतनी सुंदर दुनिया हो सकती है यह अंडमान जाकर ही जना। कोई भी चित्रकार अगर अंडमान जाएगा तो उसके चित्रों

भारत भवन में संजू जैन की चित्र प्रदर्शनी



में अंडमान नजर आएगा ही आएगा ही क्योंकि वह जगह है ही इतनी खूबसूरत। सभी रंगों के इस्तेमाल पर उनका कहना था कि मैं चित्रों को अंतरात्मा के साथ बनाती हूँ और इन

चित्रों के रंग मेरी अंदर की खुशी की अभिव्यक्ति है। प्रदर्शनी में चालीस के करीब प्रेंटिंग्स होंगी की गई थी। इनमें दो बाई दो के छोटे चित्र थे तो पांच बाई सात फीट की बड़ी पेंटिंग्स भी। रूपाभ

शीर्षक वाली यह चित्र प्रदर्शनी भारत भवन के रूपंकर प्रभाग की प्रस्तुति थी। तेरह जनवरी तक चलने वाली यह प्रदर्शनी दोपहर एक बजे से शाम सात बजे तक खुली रहेगी।



**भारत भवन
में रूपाभ
प्रदर्शनी**

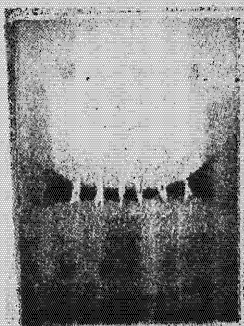
कैनवास पर उदासी और उल्लास के रंग

जागरण सिटी

मेरे लिए सृजन करना स्वयं से संवाद करने का माध्यम है। हर कैनवास खुद को लिखा एक खत है। इनमें जीवन के सुख-दुख का ब्योरा है। यह कहना है संजू जैन का, जिनकी चित्रकृतियों की प्रदर्शनी का उद्घाटन मंगलवार शाम भारत भवन में किया गया। रूपाभ शृंखला के अंतर्गत आयोजित इस प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रख्यात चित्रकार लक्ष्मण भांड ने किया।

39 पेंटिंग्स की इस प्रदर्शनी में विभिन्न साइजों की चित्रकृतियां देखी जा सकती हैं। सभी पेंटिंग्स के विषय एबस्ट्रेक्ट हैं तथा रंगों का अनोखा संयोजन बोलता हुआ प्रतीत होता है। टेक्सचर से पटे कैनवास पर पड़ी कुछ सिलवटें संजू के स्टाइल सी

प्रतीत होती हैं, जोकि अधिकांश चित्रों में दिखाई देती हैं। बाहर से शांत दिखने वाले स्वरूप में अंदर



किस प्रकार से सिलवटें लिए होते हैं, यह चित्र साफ तौर पर अंकित करते नजर आते हैं। उपयोग किए गए रंगों में कहीं उदासी है तो कहीं उन्मुक्त उल्लास। संजू जैन को जानने वाले बताते हैं कि

इससे पहले संजू की पेंटिंग्स में डल कलर ज्यादा दिखते थे, जबकि इस बार अधिकांश पेंटिंग्स ब्राइट कलर्स में हैं। पूछने पर संजू का जवाब है कि पहले मैं जीवन को ऐसे ही देखती थी। तब मैं नौकरी भी करती थी, आज मेरा जीवन बदल चुका है, मैं पूरा समय अपने घर तथा अपनी कला को देती हूँ। मेरे जीवन की प्रसन्नता तथा संतुष्टि अब मेरे काम भी झलकती है। रंगों की च्वाईस पर वे कहती हैं कि अपने किचन में हल्दी और मिर्ची के रंग भी मेरे लिए प्रेरणा बन जाते हैं। वरिष्ठ चित्रकार लक्ष्मण भांड कहते हैं इसके काम में इसके जीवन की झलक देखने को मिलती है। यह प्रदर्शनी 13 जनवरी तक चलेगी और दोपहर एक बजे से शाम सात बजे तक अवलोकन के लिए खुली रहेगी।

स्त्री की रंगप्रियता का रेखांकन

भारत भवन के बाद चित्रकार संजू जैन दिल्ली के कला परिसर में देगी दस्तक

विनय उपाध्याय

भोपाल। एक स्त्री के भीतर का उल्लास क्या होता है? अगर रंगों की भाषा में इस रहस्य की पड़ताल करनी हो तो संजू जैन के केनवास पर बिखरी छटाओं को निरखा जा सकता है। भारत भवन की रंग दर्शनी दीर्घा में वे अपनी हाल ही रची श्वेत-श्याम और बहुरंगी कलाकृतियाँ लेकर नमूदार हुई। मंगलवार शाम 'रूपाभ' श्रृंखला के तहत इस छह-दिनी मुमाइश का उद्घाटन करने संजू के प्रथम कला गुरू प्रख्यात चित्रकार लक्ष्मण भांड खासतौर पर मौजूद थे।

पिछले एक दशक में भोपाल के जिन युवा चित्रकारों ने अपने फन को समग्रता में गढ़ते हुए आधुनिक चित्रकला को प्रयोगधर्मी समृद्धता प्रदान की, उनमें संजू जैन की उपलब्धि और यश को अलग से रेखांकित किया जा सकता है। 'रूपाभ' प्रदर्शनी में उनकी उत्तरोत्तर



परिष्कृत होती प्रतिभा के अक्स साफ़ > बोलते हैं। इस संयोजन में उनका पिछले एक साल में पूरा हुआ सृजन उद्घाटित हुआ है। संकोच और विनम्रता से वे फरमाती हैं - "मैं तो अभी भी अपने को नया चित्रकार मानती हूँ। यह मेरी जिज्ञासाओं का

दौर है। अपने को खोजने का जतन इन कलाकृतियों में कर रही हूँ। कह सकती हूँ कि मेरे भीतर का उल्लास इन चित्रों में फूट पड़ा है। अपने स्वभाव के अनुकूल मैंने आसपास के रंगों का चुनाव किया है।" बहरहाल प्रेक्षकों के कौतुहल और जिज्ञासाओं

को टटोलें तो पहली बार सफेद और काले को कलम और केनवास की सोहबत में नए रोमांच का रूप देती संजू के अंतरमन की परतों तक उतरने की नई कवायद भी शुरू होती है। खुद संजू खुलासा करती हैं - "श्वेत-श्याम की संगत में रंग क्रीड़ा मेरे लिए

सबसे अधिक अनोखी थी। मैंने इस माध्यम में भरपूर आनंद लिया। लगा जैसे मेरे हाथ हीरा लग गया हो।"

कला का ककहरा पढ़ाने वाले गुरू लक्ष्मण भांड अपनी शागिर्द के सुगढ़ चित्रों को देखकर

गर्वित प्रसन्नता से भरे थे। उनकी नजर में ये चित्र एक स्त्री की स्वाभाविक रंग प्रियता और रंगों को लेकर खुलती एक खास दृष्टि के परिचायक हैं। भोपाल की चौखट से मुंबई की जहाँगीर आर्ट गैलरी तक सृजन के नित नए सोपान तय कर चुकी संजू जैन 'रूपाभ' में चस्पा इन चित्रों को लेकर अगले माह दिल्ली के आर्ट हेरिटेज सेंटर में प्रस्तुत होंगी। संजू अपने काम के प्रति अपेक्षित प्रतिबद्धता और लगन की हिमायती हैं। मध्यम वर्ग के लिए महँगा शौक होने के बावजूद मेहनत से उन्होंने संसाधन जुटाए हैं। केंद्रीय विद्यालय की नौकरी छोड़ी और पूरी तरह रंग-रेखाओं में अपने मन को रमाए रखा है। युवा चित्रकार बसंत भार्गव कहते हैं - "संजू दीदी की लगन और उनकी कला में लगातार आ रहा निखार नए चित्रकारों के लिए प्रेरणा है।"



अंतस में छुपी छबियां चित्रों में

भोपाल, 8 जनवरी, नभासं. जीवन ऊपर से जितना सपाट, समतल और शांतिपूर्ण नजर आता है, दरअसल अंदर से उतना वैसा है नहीं उसके अंतस में कई छवियां छुपी हुई हैं जो समय-समय पर उभरकर उसे गतिमान करती हैं.

भारत भवन में आज रुपाअ श्रृंखला के अंतर्गत शुरू हुई संजू जैन की चित्रकला प्रदर्शनी में उन्होंने अपने चित्रों के बारे में बताते हुए यह बातें कहीं. उन्होंने कहा कि सभी चित्रों में मेरे जीवन की झलक है. संजू जैन द्वारा प्रदर्शन हेतु

39 चित्र प्रदर्शित किए गए. जिनमें सबसे छोटी कृति 2 गुना 2 की है तथा 5 गुना 78 की भी एक पेंटिंग है. चित्रों में ब्राइट कलर का प्रयोग किया गया है जो जीवन की सकारात्मक सोच का प्रतीक है. चित्रकला प्रदर्शनी का उद्घाटन वरिष्ठ चित्रकार लक्ष्मण भांड ने किया. सभी चित्र लगभग एब्सट्रेक्ट प्रभाव लिए हुए हैं जिनमें कहीं न कहीं, कोई न कोई छवि उभरती है, चित्रों में उभारी गई सिलवेंट जीवन के अंतस की उथल-पुथल को दर्शाती हैं.